

*र्न्हे*भोगा प्रारक्ष्मघटी MCC)201325555.CC)2M हुम लिप्पाङ्कभिर्ग प्राथापार्व मधा (७ए हेन्द्रम्सार्थ म्हेडरेपाञ ही ट॰ जातीएी ए टर्मापनए <u>जात</u>्वेञ्चल मरुताप्ट भारहरू



प्राष्ट्र*ाज्या महीराज्याराज्या* । प्रोजाण्टा देव्रसेपा<u>ज्र</u>सर रेगोप लेखर्माणी त्रेसप्पासल : ष्णण्हस॰ष्टलाय ष्यात्रेणाय ण्येम गाउँ राज्या म<u>्थ</u>ा



ぴぴぽと <u>(77</u>0%をとく) मा⁹ प्र*भित्रतिराश* भूम प्राप्तमार्क्षा (८° व्यः८०) of of) ार्ग *ने*खर **प्राह्म स्वर्ध क्राह्म अप्राह्म अप्राह्म** टरा प्रमासिस जनस्य ซื่ซ เมเต็มใชย โบงรช *™x ⊼"cz cech*



०० हुन <u>ऋते</u> इड हा सिख प्राप्ताकृतियः क्षायः **मॅ.जॅ/म.**छिष्ठ *C*९म्बर ४दर्व १५४४सणाञ्चर मिष्ट जिस्स् त्रेणर्रे एयोभ टॅक्षेठम हमऋिर प्रेष्ण४ स्टीहम

₹ ‱.00

ട്ടെ യിന്നു ജിട്ടെ , മാന് ലേട്ട് വിയാട്ട് പ്രസ്ത

HUEIYEN LANPAO.

RNI Regn. No. MANMEE/2009/31282 Postal No. MNP-409

<u>भत्र</u>ण्यामण्ड सेप्र प्राप्त जामती में एक प्रत्य अर्थ प्रत्य अर्थ प्रत्य अर्थ प्रत्य अर्थ प्रत्य अर्थ कार्य जान के जान क

<u>भग्रं</u> च प्राया प्रताहित्रमण विष्य सम्बन्ध कर स्रम प्राया कार्य कर स्रम

क्र. मह्नेन, प्रकारिक १३८ (मूर्य प्रज्याह्म ग्रिट् हर्द्धणीम होग्रा स्रांत हर्ग्य अल्डा एटर्न प्राथाभार एम जिल्ला जार न्यर्ट भग्रद्ध र अमार्याण दिस्तर्य प्राचित्र प्राचित्र र अभिष्य भीमभी जर्ड भण्जर ज्या विरोमिष्य വെ രാക ചെ വെ നായ ചെ പ്രവേധ വെ करा म<u>सित्र</u> मध्यातक यात्राक्षा प्रात्मात्रक नामंत्रीम ह्यामा स्थापित मार्गित भागांत्रीम रिवास ॥ <u>भ्वर</u>णञ्जीसञ्ज् भ्वर प्रारम्भ

विद्यासाया भारतियाँ मञ्जूषे ४८भीतम् स्रात्माचर्यर मध्य २२ कात पारक्रक राजा स्रहरू र र छण्ट भिर्प प्रार्ट्स प्राप्तिस एउदर्ज जामहीस े अञ्जू रस्त्रं मधर्कात प्रार्थमञ्जू प्रदेश राभस् हर्याण आयार्स राज्यमण व्यापा णाभेंड ईग्रह भागातामार मि ॥ अने द्रीमा ा निज्ञार पानिस्त्र स्वाधिस रोजार ,ाँको<u>भस्त</u>माक राजांत भीस छुत्र छुत्र एक्ट पान्य पानिस्त्र भीका पानिस्त राजांत स्वाधिस के पानिस्त ॥ रेट्यार जास्त्रं



क्रिभ्यार्य हर्मण भारसमार रर्भन पर्मभूत सहण मंन्त्र विराजनाय सहर्भन पालन प्रत्याप्त प्रमुख सहर्भन

द्रश्येंस आप्रा<u>र्</u>ह्माल क्रिस्ट के हिल्ली है सिली हे सुर्वेस हम के स्वार्थ के स् ण्डणीय हुदर्गम एटीटाग्रा ॥ रिराप्त भामा भाषा विष्या १५० विषय १५० विष्या १५० विष्या १५० विष्या १५० विष्या १५० विष्या १५० विषय १५० विष्या १५० विष्या १५० विषय १

एमजए प्रस्कृह्मज्ञा ऐस्राच प्रताण कि सामानगाने गर्य तमध्य समान स्वर्भ स्वर्भ निर्म प्रयाप में तम् प्रमान

लिस उर हिन्दर उर्भाभिक राज्य सिम्

न्समञ्जू आत्मार्क्यामा स्वाधार <u>भन्</u>य रण्यन्त्रस्यात् रहें प्रोत्यायम् रणभ्यसम् प्राचित्रमेन्त्रः विप्रभुष्टः ए व्याप्तम् रण्येत्रं प्राप्ति े जिस्मा अर्थ हिस्स विश्व किस्ता के जिस्स के जिस

॥ ब्रिट्यर्क प्रेर्णीय अनुरक्ष किम्मण मुस्तर रिक्य द भेर्रे म पर्गार विद र र जार प्र ोह्रमाण भिग्नारा<u>भव</u>्द हरूमा भरपाद्य संग्राधिक रहिला हिल्ली मिल्री क्रश्राथ हें ब्रह्म ग्रामिकाराण्या मध्य भिष्क एग्रीऽक्रिज्ञत ॥ बिर्देष

HL Poll

Q: JCILPSki hannagi convenor Khomdram Ratan policena fajinbagi thouong yaningbra?

POLL CLOSES AT MIDNIGHT

No

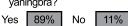
Vote thadanabagidamak www.hueiyenlanpao.com

NGARANG GI RESULT Q: JCILPSki hannagi convenor

da Visit toubiyu

Khomdram Ratanna miyam marakta tinjage haibasi yaningbra?









मेखकश्चराधारणी, लेव...!

महोन, प्रामार्थ १३१ (प्रामार्थ ह्यू माहिलाहिला हुन से सामार्थ हुन अर्धिः हर्षमञीम ॥ रिसन एमण ॥ गण्डीय पाडवर्ड हमय जहजनभर लग्जीहरूव हम्भिर ः(लभ्ज जभ्ज प्राविद्ध एरिक्स मन्धर रज्ञिल । विदर्व दें उज्जीरपान स्वार्थि ह ३ भ्रम्भिण उप्टें भिम भन्स हर्षण में मारे के हिन्स विकास के स्वार्क के स्वार्क के सिर्धा मिल्ला है से सिर्धा है स

ण<u>अध्य</u>भग मठीज्**षाः न स्थाप्रतिह**ंगार विभाभः मञ्जसाणा ॥ दश्वरं प्रत्याप्तरम् एरभ्रमण मिल्यः ॥ ऋमातः एस्ट्रें विभ्रमण प्रार्मणं राज्याप्त संभूति<u>भ्वर</u> प्रारा<u>भवर</u> प्रारा<u>भवर</u> ट्राचित्रं प्राचित्रं के अध्यादिक अधिक अध्यादिक अध्यादिक अध्यादिक अध्यादिक अध्यादिक अध्यादिक अध्यादिक रज्याध्याधारी भाष्याधार , अदशारमध्या अरहं वर्षे उदर्व वर्षे । मिट्ट ह्या प्रमार्थ प्रमान अनुराधि भूतोम

प्रीमम भामठ १५४ हर्ग रे एक्समें रुपादम भागारभ्र स्वाधिश्वमठ भामर्भित रुप्त रहे रुभार्मित्राष्ट्र र रेंब ग्रेटार्ग्य प्रान्ताव्य भीमपु प्रमुचीर प्रशोठाम भीमपु भारो<u>भ्य</u> माप्ताव्यक्र स्थान प्राणीमें राज्य सरणमन्य । त्या विषय व्याप्य जीलरीत्यन्य रिप्यापा १६ र क्रिभील सरण्य पापालीमर्स्यात ීय E.G.ह.तमा सा, साहता कुट.०० *О*ळ.त्याम इंस्टब्यट्य प्रह्मधुष्टु सर्वत्य, यद *प्र*प्तामिकात् स्थाय ॥ १५८ छन्यामर अशिष्य<u>भा</u>र हद्य

हर्द्ध भामार्ष हरिलाभम हिम्में , जहभेद सिम जपार्जम र्जित राज्ये हें सम्मात र जन मन्त्री जिल्ला र जन मन्त्री जिल्ला राज्ये जिल्ला हर र मन्त्र जाता जाता जाता जाता ज प्रात्य हम्मा कालाव कालाव कालाव कालाव कालाव हम्मा अर्थ कालाव काल ह हैं <u>छत्त</u>ामाने भार्यमान हिस्स हित्रामिकार अक्षाने एक सिस्मान भन्न हिस्सा स्थापन हैं है है । १०४दर्क ग्रेम्श्व ग्रम्भन्यभाषा ४ वर्षेत्र सहुमत्रम् ॥ तिस्रित् सुमध्य ० ग्रारीस्थद ५०द राभ्ण सिम्म ार्द्ध रह्म प्रणाल पारम भरपान्त्र रद्धण विपानरीम सपाद्ध रह्माल प्रभन्नमंत्रीन लगात्र एक साम होता निर्माण के जिल्लामा के जिल्लामा स्वाप्त के प्रकार साम साम होता है। जिल्ला के उपने के अपने के अपने ॥ स्टिबर्ट्स द्वार प्रभारा समह्रास्थला हिन्स हुन । स्टिस् स्वार स्टिम् । स्टिस स्वारा<u>भिष</u>्ट

र्जार्थ एवं जिल्ला सहस्रोत उत्तर्भ भित्रीक

णिलं (४३) हैं। मध्य म<u>भ</u>यतर्घ हिमारी होन्हें अपने अपने एक स्वर्ध मार्चे हिन्दे रिजाभुद्धित കടിന നേലിലെ പ്രത്യാക്ക് ഒരു പ്രത്യായ നുവന് പ്രത്യായ നിയാ പ്രവേദ്യ വരു പുവന് പുവന് പുവന് പുവന് പുവന് പുവന് പുവന് ॥ भर्रेष भएन्यां महरून प्राधिम अहर्व ट्राब्या ग्रहमहम जाभार राणीभरतीह हर्द् । विषय सहस्र मार्थिय मिटिश्च सह मार्च स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स रद्धां अर्थ हो मुर्च महण्डे के अर्थ के अर्थ हो सार्थ है से सार्थ हो हो सार्थ हो हो सार्य हो सार्थ हो सार्थ हो सार्य हो सार्थ हो सार्य हो सार्य हो सार्य हर त्रसमात्र हरे देंसमहरहमारी भारतहरूस एस गामित हम , राजमहंस एक इद्धारम (०५) विभास्त्रं विष्युष्ट दे विष्युष्टम रदर्भभाम (४३) र्मध एग्र पर्भद एथोठार भिन्नाराप्यभित्त म (as) विषय प्राचिता हुन प्रतिप्र प्राचिता प्रतिप्र हुन प्राचित हुन प्राचिता हुन प्राचिता हुन प्राचिता हुन प्राचिता हुन प्राचित हुन प्राचिता हुन प्राचिता हुन प्राचिता हुन प्राचिता हुन प्राचित हुन प्राचिता हुन प्राच . अनेषा १९ १ वर्ष १ व നാക്കുറ്റ ചെന്നു പ്രധാന

> . ह्या हिन्स प्राप्त (8%) सम्बंधा प्राप्त क्रिक पा अवर्थ मिल्ला प्राप्त स्थित स्थाप अवर्थ मिल्ला प्राप्त स्थाप अवर्थ मिल्ला प्राप्त स्थाप अवर्थ मिल्ला प्राप्त स्थाप अवर्थ मिल्ला प्राप्त स्थाप अवर्थ मिल्ला स्थाप स्था ा रद्धा अर्थ (३३) रिदर्ध स्क्रा । रिराज्यायर्थ ॥ रिकामार स्क्रीम निरुद्ध स्थानम निर्मात स्थानम ਟੱਕਕਿਲ

ग्राचा प्रमाणित हे म<u>भ</u>ावर्त प्रमाणित हे प्रमाणित हे प्रमाणित है ।

αΩજુ गळभळा আস্করি⊓-रद्धा (३८) हिस्टीद स्क्री भा र्धिमंने से एक अध्यक्ष्य र्योग भा रहामार स्थाप है है।

...ह्य दर्मेट द्रम

°ण र°ण स°ण लापणाडामर्क भणभाषणा हुं संदर्भ

फ्रमहेच, (प्रेंस पण्ड पण्ण)ः मार्थेकम गेभारेनस्र ዜ›<u>ህ</u>ፀ.ፎዡ。ፎ_ናዖጳ मिष्यभूष्य प्रधानम्बर्ध

ज्ञान के जिल्ला है जिल्ला के जिल्ला ीर्याद्रीम्बन्नद न्नद्रीछर प्राटमम यामार्यातमात्राम करायात्रम भाभामा प्राप्तात्रमात्रमा या उर्ध अध्यास के अध्यास में अध्यास से अध्यास टल्टिल्स्या मोक्स्मार्थ हिन्द म्प्रामुद्ध उज्जातात्रक त्रियामुद्ध

विसाधणाः सञ्चे जन्ना जम् रिक्षार जन्ना प्रमाधणाः स्वारं स ट्रप्राचिष्ठा सम्प्रा

क्षानिक कि साम कि साम कि हिंद के प्रात्ति के प्राति के प्रात्ति के प्रात्ति के प्रात्ति के प्रात्ति के प्रात्ति के दर्धाम राष्ट्रीय सिर्ध रिक्र आत्या प्रत्या प्रतिस्था स्थापार्व स्थापार्व स्थापार्व स्थापार्व स्थापार्व स्थापार्व स्थापार्व रणीयर भागाम १८ वि ॥ <u>भन्</u>यमर्क स्रोटाम महमर ॥ १५मम ४ एउर सरोन्याप्य इंस्ट्राल्क मेर्स्य एन

TOLE

बाधा अस्तर्य ॥ अस्तर्य ॥ इत्यारक स्था भूप । अस्तर्य ॥ अस्तर्य ॥ अस्तर्य ॥ ग्रीत्रक्र दर्गमि रिश्वदर्ग गर्भर रोज्यार्गा सक्ष सराधारण विश्वास संबंध हरे एए एएए हर्द्ध व्यासिक्षात्र विश्वास स्वासिक्ष प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्पर्लेट रत्यम स्नापार्च एदर्ग पर्स्म ॥१५मम स्वाधित्रक कर्षेत्रक कर्षा के स्वाधित कर्षा कर ह्येटा आत्मानाय हुन हुन । दमनवर्ष नात्मनवर्ष नात्मन हुन्द्राप्त । दमनवर्ष नात्मन नात्मन हुन्द्राप्त ॥ निर्दर्ध देम ९७५ वर्ष हिन्स हिन्स हिन्स विकास का अपने । १९ <u>भर</u>्म १९ वर्ष सक्षण **प**लीन, रही द॰ महीण र्भ गिणमंम प्रशासक राष्ट्रीय चौरिम

> न्द्रीम हर⁶णस्ट न्यांट गार ग्रम्थ॰स्टा<u>भग</u>र र भिन्ने सम्मार्थी का भारती हैं।

अजनाया विकास अल्लेस हा क्षार्ट्य °S रि भारिनिहा <u>भन्त</u> गर्न एद[्]या वालमण रहत्तरभर अन्त्रवार्कि उरी द गार्वा प्रामा हमा प्रमाण समा भारी व रहेर मञ्जा भारा १५ राष्ट्र നാചന ച്ചുമാന കുറില്ലാ വേധം വിവും വിവും വിവും വെയ്യുന്നു വെയായുന്നു വേയായുന്നു വേയായുന്ന ॥ <u>भव</u>रापर्व तद्वीय संत्रभाग रभीम र राजनातील जिक्र तथा प्राचार प्रमास र का एक

णिसण पासक , अयर में रोस्ण <u>क्रमें क्र</u>मिए एपए ग्रोष्टकए लेपाट॰

।। ब्रेन्ट्रबर्सा ෆෆදිया स्टोल्डी ज्यालास्याल स्वार्यन्टर स्वाप्टम टाएउम क्रियापिकरटारेन्र किटाएउन्ट

प्राधानिक स्ट्रिया अध्यात अध्यात स्थात मार्थ माराज्या अध्यात स्थात स्थात स्थात स्थात स्थात स्थात स्थात स्थात स

भिष्रक्रण भिरुद्धक विद्यारि विस्तर प्रतिवादिक स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप ॥ <u>भस्र</u>हेन्यारी अञ्चासण्य हर्तात र्वे सम्मण या हर्त्रहोल ज्रहीभ भाषीयम र्वेण (१९४० ज्या महर्त ज्ञहर्त ज्ञणीम विवादम स्रोहमड पाडणार्थर भव्र दर्गीम रुसीस्त्रजात ज्ञाराज्या भराष्ट्र दर्डमंड पार्वम । दाँघा <u>भक</u>्षण्रीनम भारतारपाटारीउमध्य एव्टें मय्रण भारतदंतपण प्रावेच रिरोद्रै प्रजन्म जाना के जिल्ला है है के जिल्ला है जिल्

ಬ್ಹಳಿಗಾ ಹಾಕಾ ಗ್ರಾಮಿಕ್ಟ್ರಿಸ್ಟ್ ಬ್ರಾಮಿಕ್ಟ್ ीणाही हाए रहीं से संस्कृत साम साम साम साम साम स्वरंभ हैं हैं हैं साम साम साम साम साम साम राज्य में अदर्ल में उपाय होते हुए आप्याधिक स्वाप्त हैं है । अरु अप्रतिकास के अध्यापत है के साम कि स्वापित के अप्रतास भाषाण्य प्रदर्भ ४५५ ४ सामान्त्र दर्भणाः पार्वम ॥ द्राष्ट्रा अदन्भ भारतातान्त्र प्रसर्भात द्राण्याम $oldsymbol{eta}$ $oldsymbol{eta}$ णण , रामप्राया के राज्य प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया के साम प्राया के भारत है जिल्ला प्राया के भारत है जिल्ला प्राया के भारत है जिल्ला प्राया के साम के साम प्राया के साम प्राया के साम प्राया के साम प्राया के साम के साम प्राया के साम प्राया के साम के साम के साम प्राया के साम के साम प्राया के साम काम के साम के स ,दर्सर पर्र टाम राज भए भए माय माय का किन्यु मारा माया है । ३३.२ प्रामा पाराज रिजाद मुक्त १२२ ,

र्देष ऐपायाक्षेत्र देष्ठल केञ्चल ॥

ीगालक्का भिर्णा ॥ चि (३२३२-२० ॥ चिनेपालदार्बाह्य चार्व्य प्रक्ति पार्व्य प्रक्रि

EX C)የመብየኦየጦየ J850 Cየመታየር ክለኤኡሁሪ プኤር 8የ 2° ጠየር ክለው ርንፎር አੇመሁ ÆየEH EHኤብ° प्राच के सामान हमएउ उद्येश जीएटी॥ टाउम्बर्स ए केस्ट्री, सर्वामा सामान स्वाच

हण्डिक स्कूर १८० १८० १८ १८५ १८ स्त्र राष्ट्रपटा राज्याक प्रत्याप प्रत्यापित पार्व विवास स्वया स्वर्ध स्वया स्वया विवास स्वया स्वया स्वया स्वया भन्दि रिक्र एक पान विभाव रिक्र हिसा हमार दल्क अर्थक स्वर्धक स्वर्धक विभाव कि विभाव कि विभाव कि विभाव എർ. टोभ्रम किस्तभार के विकास है जाने हिल्ला जाने के जातिक है जिल्ला के कार हो जातिक के जाति के जाति ज ीब्दीमास ॥ इन ८० अगम् माम मीब्दी जातिल १० १८ ॥ जिल्लाम कर्म कर्मा जिल्लाम । जिल्लाम अर्थ हर्म कर्मा जिल्लाम । जिल्लाम मञ्चिये विकास प्राचीत हा अरभर हरिष्य मत्रम जीएक भागिराभिष्याल हा अरभर हीठानेह पालर जहाम प्रसाम तथा तथा प्रभा उन्नाम अर्था प्रभा उन्नाम अर्थ प्रभा अर्थ प्रभा उन्नाम अर्थ प्रभा उन्नाम अर्थ प्रभा उन्नाम अर्थ प्रभा अर्थ प्रभा उन्नाम अर्थ प्रभा उन्नाम अर्थ प्रभा अर्थ प प्राथित महिम हमञ्रक्त ॥

ग्रीण १५ दह्यम प्राच्यम

हरम्म ीणीव्याभिष्णाये ऋत् ट्रास्टर्लियाँ मधीन राजें भिन्न जावियोधीय जिजाइनक रीष्टा अर्धार सर्वार मधिणार्ज रेष्टा अर्धार जिज्ञ हुन

्र कि हार्यर प्राप्त कर का मंत्रीम भावित स्वाय प्रस्ति हा वित्र हार हिल्ला मार्पाप किल्ला के साथ किला है है है ट्रॉ) ए अडमध्न होखपण भागात भिराटक हिस्स मारीड होधर्दक एसमाप्रप<u>र्धिक</u>ुट एहुडील छोग्न रवार्थक्रम भिराटक होधर्द्ध । ह्य २००३ ईमाख्य ,ीजदर्ज उदर्श्वार ११<u>क्य</u>टें एष्टर्ण भिर्म हार्णक मेख्यार हार्णका भाषार हार्ग महाम नेष्यार हार्णक उन्हरें और पार्ट पर्या हर आपार्ट मर्ट करे कि महम महोम भागेर ।। विस्व महोम १५८ भाष्यारिक ।। विस्व करे कि महम महोम भागेर स्त्रु भारूमी<u>क</u>ाएक भा ३२०३ ईमल्ल हरतार्ट अस्त संस्था उत्तर हे कि जिल्लाहरू प्रसान के जिल्लाहरू भाषा के प्रसान के जिल्लाहरू में अपित के प्रसान के जिल्लाहरू । विस्पाधके पाठक भागेक भागेक एक महास भागेक प्राप्त भाग है है। । विस्पाधके पाठक एक भागे अपार्य १५ १५ १५ १५ १५ १५ नक्षेत्रक हैं स्वर्ध है के प्रायक्ष विकार हो कर है कि स्वर्ध है कि स्वर्य है कि स्वर्ध है कि स्वर्ध है कि स्वर्य है कि स्वर्ध है कि स्वर्ध है कि स्व

।। ब्रिस्मार्ट्स एउन्हर्क्, रहामार्ट्स विभावित्राभाष्ट्रा स्त्र

गोभा °ठ वि एस स्थान दिन्ताभाष

अवर्ष ।। जिस्स सभीम अवर्षर स्वार्धम दर्भणीम ।। जिपार्ट जर्भणीम स्रितिष

उडिए उन्नाम जारिक रैपार्वस , दर्वर असक्र रिक्ट प्रसाध अञ्चरी र टैपार्य भारकार उद्धापभाग राजनात हे भारतीर भारतीर्थ प्राप्त अध्यक्ष

स्क्री दक्क राज (राज्य या प्रक्री) ४१२ भराभाष्य , र्वमद र्गाएकी <u>भग</u> विषय स्थान हुए एक सक्षेष्ठ विर एक देश द का ज රාග වෙන්නේ දිවිසමය සහ සාස්සාව ස්ව<u>ූස</u>යේ . සි පරාහමයේ ॥ ॰ ५ जामभागात स्थानेया एथेया अभाग जीव्यक्तेय रि. जीव्यक्थ ਨ lpha? ਆਪਿਤਾ ਹੈ ਜ਼ਹਿਨੀਤ ਨੂੰ ਦੁਖਲਭਾਨ ਨਾਤਾਦਾਨਾਭਕ ਨੀਲਾਤਕ ह्योऽ⁶र्णण थ्य प्रश्नम अञ्चर्ल प्रपर्वे सम्रम सम्रोट रोब्रपर्वे स्पर्वे स र्रस्याल रुह्नम प्रक्रीय रोज्यायके ह्यान्मम रद्धम वर्षणार्थियाल प्रभूष भःषा अधिकार ॥ विषय प्रमुख्य प्रभूष प्रमुख्य प्रदर्भ वर्ष ካዛርንው oxtimesው እናን oxtimesት አመር እንደራይ ካዛው oxtimesት አመር እንደራይ ከተጠብ णमध्य अर्थाण मध्यार र्ह रमधद्या पणधायम ॥ भिदर्श त्रियाभग्रज्ञाभन्र

°5 पा कि जिस्सा अहा है स्ट्रिस

म्ह॰क्टी क्रिट्टिक्ट होस्ट॰मार्लिक स्थल्प भारताम<u>्य</u> संस्थलम रूरमधिष्य श्रष्ट स्रीरमंड दर्रम एष्ट्राचाष्य मध्रम भार २२ भिराटक के ୬:७५/१११८७७<u>/१४</u> १५५४% स[ू]र ८३ ८३ ५३ ॥ १५४६ १५ ५५॥ १५४७ १

रिक्रमाम्बर्ध येक्ट एक्ट्रिय प्रमुक्त

°5र्ण स्टब्स् मर्रण म

इस्ट्रेन, चिंगल ५३ (चेंत्र चल्ड चल्ल)

(स्टर्मा) अध्या^क द्रामा ४ के जीब्द्राजनाराज्य भूमाजम шलुमक्र अध्यात , भर्रद हर्द्ध , रि एक एक एक है का रि पालुमक \mathbf{F} ෆුව්ව \mathbf{D} නගංවාසර්ශං \mathbf{D} දෙන පව \mathbf{F} වෙනු \mathbf{M} වනංගෙන්ගං \mathbf{D} වයරු ॥ भिदर्श् ग्रमण रुभित्र ग्राप्पर ग्रमञ्ज

प्रसाथा एथा हिन्स भिन्न

इस्ट्रेन, चिभाज्य १३३ (चिम चण्ड चण्ज)

टमग्रेट्य प्रभूष्य प्रम प्रस्तुरुन्त्रीण अल्डान्स, मान्यनममोस, णीर्राधर्यः ए. १५० मित्रः जा जिल्ला जिल्लाहार हेनु से स्वर्गात जार्र्यमद भ<u>र</u>े उदर्ग भामार्क सर[्]र विरो<u>ज्ञ</u>समास विदर्गार जुड़्यार जुड़्यार ॥ <u>°भन्</u>यपार्टमार्गात रह १२ रिपोटिया के मार्य प्रम**ास** र**ेष**बोरू म

रिपर्हजूर होटाम मञ्ज हिमहर्जात हर्द्धमध्ज भारिक प्रमुख राष्ट्र देस रदस ,४७५५ ७०°मध[्]उ७द उर°र भ<u>िउ</u> स्वाशिद[्]याम ,४७५-७७*त* स्टार्थम भाषाभ<u>ाउर्</u>यक<u>्मा</u> ४७५ भिम पारण्णन भा ण्यात्रमण शाह्यवार्षाः प्रमथव्या भाहरणञ्जीरील एञ्चे भा<u>भह</u> रमग्र गञ्चर-ट्र परिपान् रजपाध्यापी भारतिष्य गर्दे रभोरमार ॥ १५४१ मा ५०५ स्त्रज्ञता ५५५६ १४ इत्योहरू

भणाल स<u>ञ्</u>छ सप्पण्न गिगरी नपा शहे म[्]भ ००३ द[्]ग्रीम सरुग्रा गर्मि प्रा නයේ වායේප මාහ්යෑහි හෆෆර හරගයන්මෙම නමාග වාර්ගය, උදාහ ष्ट्राचे का अर्थ के उस्ते के स्वाप्त के स्वाप · ඔහුෆ හහෝපාජීණය ක්පින්දායන් ඔෆුන්න 1න්නේෆ් නංන ෆවර අන්ල ०.३ भरीम⁶51व्य गिष्टलभर्<u>टराष</u>्प्रहल्त् पा<u>भिष</u>्टलोह्र र<u>भन्</u>द्र ॥ बिर्दर टेग्रागा स्ट्रिया ज्ल्यटिक सहसम्न टैंक्टीय ग्राथेजर्ने गटि॰टम प्राये-टेक्ट थरङ्गल प्रमुख भिर्मद<u>्यमा</u> जस्म मधम ॥ व्यंडे रर्रप्राष्ट्रस्य जाप र्धेदर्शात लुहराभारभ्यप्रीड रापार्क्षेड माम भव्यञ्चल-हल पाभव्यभ्य मायाधी प्राप्त स्थान स्थापन स्थापन विश्वास विश्वास कि मार ज्या मार ज्या मार ज्या मार का मार का मार का मार का म

प्राथ्या ४१ स्रिक्ट

०म्, त्र १८० मा अर्थ १८० मा अर्थ प्रमा १६५ भणना में प्रमाद मा प्राप्त स्थापित स् മൂരാമുള്ള പ്രത്യമുള്ള പ്രത്യമ रभिष्ठसार्षायध्यामा अञ्चाष्ट्र - दर्ष ന്റാംജിജ്ചംമ്മ മന്വാനംന് പ്രധാന്ത്യന്യും പ്രധാന്ത്യന്ത്യ വെട്ടാന് പ്രധാന്ത്യന് නරංඟවාගයා වෙද්ගන්න වැවැන්ට බාග්ග කතා අතා ॥ අභූග चिणार्ह गात्पाडभन्द्रीगात दर्भभ्य स्वाधानस्थाप्य स्वाधान्य सम्ब णित्रश्रहार ल<u>भ्</u>यावाध्य हस्त्रं ०३ जित्र १२ जिल्लिक दं ॥ भिदर् ලංලාග් හා ගැන්වා යන් විවාදී නියා නැත්වාග් मामस्थितात् अन्य (क्रम्मित्या (क्रम्मित्यात्रम् क्रम्मित्या क्रम्मित्या विषय । भिदर्श प्रमाण प्रभाभ प्राप्ताचित

मर्भणंभा ८०भरटा

अध्या प्रकार १८८ भटना अध्या प्रकार प्रकार स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्थाप

सिटिए <u>जिल्</u>या कि श्राप्त स्थान के साम स्थान स्था स्थान स्थ ाण्याध्यस प्रश्वेष्ट क्राह्म होते त्राह्म अध्यक्ष अध्यक्ष स्वाध्य स्थाप ण्ट प्रसाप्तित प्रीरहर्तम्य . १२४७ ८ २५५१२ भ्रम्याभीत्र १४४२ ॥ १४ © भरेत रिस्ड के जिस्का प्रणाल करें के अध्य प्रणाल के अधिक अध्य ०५ ८५५ । जिल्ला हो हा उटा ०४ हमी र दर्व रे प्रिक्ता क्षा हो ीजीट्रफ र्र टिप्स मर्भजन्थन र जिस्सामा आपार्टिस ५५५ जिस नामभेर ह्य हिंदी जार्ट्य स्वार्य स्वार्य हर्ष ०३.३ प्राप्त प्रार्थिम जा ३२ रोह्रजब ४५४गज्य वाटामक वाटाजर्ह भारीहरूब प्राप्तार्वा ්හ් න[ු]ක්ෂ-නාක්ෂ ප[ං]දා මාස්ත්රය දක්ක්ෂය ක්රීත්ක වන් , පහසයා කොහොන සහක පස්ස ස<u>න්සැස්සේද ආක පලිතුණෙ</u> ॥ भिदर्श ब्रिस्ट प्रमुल छरिष्टा दर्श्याम

प्यमिसीया दि दि सिथिया

अटमें प्रकार अट्टी (प्रकार प्रकार प्र प्रकार प्र प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प

ह्र ३२ भारित्रम के एरुङ्गाराज्या भटार्मा विद्याचीमाम स्धिरीय ४ अन्तर्घ सम्म सीन्ध्रीय राजार्याचामा निर्देश एक्सा राज्य u <u>भन्</u>योगा पार्रह्मात ४ एर पार्टी प्राप्त प्रभारीयम् , रिस्ट्रिंट इंग्र प्पारीम गहर्द्धा मधम गर्रथ जल्डिमर्ट प्राट दर्ह प्रिपानिम <u> पत्र प्रस्कार रक्ष्य सन्द्रियम स्ट्राल</u> क्रिया स्ट्राल ीर रेट एमक एसिट प्राप्तार हर हर निर्माणक एं राप्तार एक्वार्स ॥ भिदर्क १५४ त्र ५५४ ४५४ पार्क्स प्राप्त हुन प्रार्थि अ

°भग्रार्त भण्डा तिमा

ः(०० क. ५५) ६५ ५० ५० ५० १५ १५

पार्ट्स प्राचित्र के प्र , बर्द्य स्ट्री एवर्क भारहण्य पार्क्ष ॥ <u>भव</u>रार्क्ष रत्नि ए टमटें जाटल्यम दिल्लीर ,र्संख्य महदम जाटल्यम दर्पा टायालुदर्र पालमण मॉर्फ्यर्ड रिस्ट लग्ण रिगानस्थम भरिपात ५२ माजारिर ल ॰ एवं ४७ अप १० १० विस्तर समा अभि १५ विस्तर १ विस ॥ भिदर्श ग्रमण रुक्षण्य प्राप्यर्थ ग्रह्मण्यर्थर